महाराष्ट्र में गन्ने की बुआई घटी, और महंगी होगी चीनी

[जयश्री भोंसले | पुणे]

सूखे से देश में सबसे ज्यादा गन्ना उत्पादन करने वाले राज्य महाराष्ट्र में इसका रकबा 2016-17 में 25 फीसदी तक घट सकता है। ट्रेडर्स और कमोडिटी इनवेस्टर्स का कहना है कि इससे आने वाले वक्त में चीनी में निवेश करने से अच्छा फायदा हो सकता है।

महाराष्ट्र स्टेट को-ऑपरेटिंग शुगर मिल्स फेडरेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर संजीव बाबर ने बताया कि शुरुआती अनुमानों के मुताबिक, अगला क्रशिंग सीजन 6.5-7 लाख हेक्टेयर का रह सकता है। उन्होंने कहा कि क्रशिंग के लिए गन्ना 550 लाख टन हो सकता है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, मौजूदा क्रशिंग सीजन में 9.67 लाख हेक्टेयर में गन्ने की पैदावार हुई थी। वहीं, क्रशिंग के लिए गन्ना 760 लाख टन होने का अनुमान था। राज्य को उम्मीद है कि इस सीजन में 85 लाख क्विंटल शुगर का प्रॉडक्शन हो सकता है।

ऐसे में ट्रेडर्स और इनवेस्टर्स इस कमोडिटी को लेकर काफी बुलिश हैं। बॉम्बे शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अशोक जैन ने कहा, 'हमें इस साल धीरे-धीरे चीनी की कीमत बढ़ने की उम्मीद है।' उन्होंने कहा कि बगैर ड्यूटी मिल गेट पर शुगर की कीमतें 28 रुपये प्रति किलोग्राम से नीचे नहीं आ सकतीं। 2016-17 फसल सीजन में गन्ने की बुआई कम हुई है। नाम जाहिर न करने की शर्त पर एक सीनियर सरकारी अधिकारी ने कहा, 'अगर किसानों के लिए अप्रैल-मई में खड़ी फसल को बनाए रखना मुश्किल होगा तो इसका रकबा भी घट सकता है।' गर्मियों में खड़ी फसल का बने रहना मुश्किल है क्योंकि पिछले साल रहे अल नीनो के कारण इस बार गरमी ज्यादा पड़ेगी। ऐसे में ज्यादा पानी सोखने वाले इस फसल (खड़ी) का गर्मियों में खड़े रहना मुश्किल होगा।

● **कमोडिटी इनवेस्टर्स** का कहना है कि आने वाले वक्त में चीनी में निवेश करने से अच्छा फायदा हो सकता है

बाबर ने कहा, 'मराठवाड़ा के कुछ हिस्सों, सोलापुर और अहमदाबाद के कुछ हिस्सों में भी पानी की गंभीर समस्या है। कइयों को यहां पीने का पानी भी हफ्ते या पखवाड़े में एक दिन मिलता है। गरमी के दिनों में इस बात की कोई उम्मीद नहीं है कि कृषि के लिए जलाशयों से पानी नहीं मिलेगा। हमें डर है कि सोलापुर जिले की सिर्फ आधी चीनी मिलों को ही अगले क्रशिंग सीजन में गन्ना मिल पाएगा।'

वैसे तो महाराष्ट्र और कर्नाटक में गन्ने की खेती कमजोर रहने की आशंका है लेकिन उम्मीद है कि उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में प्राइवेट शुगर इंडस्ट्री प्रॉडक्शन बढ़ा सकती है।